>

Title: Need to ensure safety measure for minorities especially Hindus and Sikhs in Pakistan.

श्री राजनाथ सिंह (ग़ाज़ियाबाद): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान में हाल-फिलहाल घटित हो रही कुछ पीड़ादायी घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। आये दिन चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रोनिक मीडिया हो, ऐसी खबरें हमारे देशवासियों को मिल रही हैं और देशवासियों को ही नहीं बल्कि मैं समझता हूं कि सारी दुनिया के लोगों को देखने को मिल रही हैं कि पाकिस्तान में इस समय अल्पसंख्यक समुदाय के लोग जिनमें विशेष रूप से हिन्दू और सिख प्रमुख हैं, आज वे पूरी तरह से असुरक्षित हैं। उनकी जान और माल की सुरक्षा दोनों संकट में पड़ी हुई है। मैं ऐसा मानता हूँ कि यह मज़हबी दृष्टि से भी और साथ ही साथ मानवीय दृष्टि से भी केवल निंदनीय ही नहीं है बल्कि यह पूरी तरह से शर्मनाक है। मैं चाहता हूँ कि संसद से कम से कम इस लोक सभा के चेयर की तरफ से एक प्रस्ताव आना चाहिए और जो कुछ भी पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदाय के साथ हो रहा है, सर्वसम्मति से उसकी निंदा की जानी चाहिए।

सभापति महोदय, समाचार-पत्रों के माध्यम से यह भी जानकारियां प्राप्त हो रही हैं कि 20 हिंदू परिवार और सिख परिवार पाकिस्तान को छोड़ कर भारत आ चुके हैं और वे यहां की सरकार से नागरिकता की मांग कर रहे हैं और यह मांग कर रहे हैं कि हमको शरण दी जानी चाहिए। 250 तीर्थ यात्री, जिन्हें पाकिस्तान और भारत की सीमा, वाघा बार्डर पर रोक कर, उनसे अण्डरटेकिंग ली गई कि भारत जाने के बाद, आज पाकिस्तान में जो कुछ भी हो रहा है, इसकी चर्चा आप हिंदुस्तान में नहीं करोगे। आप यह भी गारंटी दो कि भारत जाने के बाद तुम वापस आओगे। इतना ही नहीं मैंने दो इलैक्ट्रॉनिक चैनल्स पर यह भी देखा था कि सरेआम एक हिंदू युवक का धर्मांतरण वहां पर करवाया जा रहा है। उसका लाइव टेलीकास्ट हुआ था। समाचार-पत्रों में यह भी पढ़ने को मिला कि चौदह वर्ष की एक बालिका का अपहरण किया गया। अपहरण किए जाने के बाद उसका धर्मांतरण हुआ। उसके माता-पिता ने जब पुलिस के पास जा कर गुहार लगाई तो पुलिस ने उसका कोई संज्ञान नहीं लिया और उसके विरूद्ध कोई भी कार्रवाई नहीं हुई। इतना ही नहीं बल्कि हिंदू पंचायत के एक प्रमुख नेता श्री लक्ष्मण दास पेरवानी ने भारतीय मिशन और साथ ही साथ अमेरिकन मिशन को पत्र लिख कर यह गुहार की है कि पाकिस्तान में रहने वाले जितने भी अल्पसंख्यक हैं, चाहे वे हिंदू हैं या सिख हैं, उनकी जान और माल की सुरक्षा की गारंटी मिलनी चाहिए। इसके लिए पाकिस्तान के ऊपर जो भी दबाव बनाया जा सकता है, वह दबाव भारत और अमेरिका की तरफ से बनाया जाना चाहिए।

मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से यह मांग करता हूँ कि भारत सरकार पाकिस्तान के राजदूत को बुला कर अपनी चिंता से, अपनी नाराज़गी से अवगत कराए और साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी पाकिस्तान पर दबाव बनाया जाना चाहिए ताकि वहां के अल्पसंख्यकों के जान और माल की सुरक्षा की गारंटी मिल सके। मेरा आपसे इतना ही अनुरोध था।

MR. CHAIRMAN : Those who want to associate themselves, please send their names at the Table of the House.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): The same issue was there listed in the 'Zero Hour'. If I am allowed to speak; then should I speak or should I speak later?

MR. CHAIRMAN: I will give you time after Shri Mulayam Singh Yadav.

श्री अर्जुन राम मेघवाल,

श्री शिवकुमार उदासी,

श्री देवजी एम. पटेल,

श्री ए.टी. नाना पाटील,

श्री सी.आर.पाटिल,

डॉ. संजय जायसवाल,

श्री राजेन्द्र अग्रवाल,

श्री अशोक अर्गल,

श्रीमती ज्योति धुर्वे,

श्री गोविन्द प्रसाद मिश्र,

श्री जितेन्द्र सिंह बुन्देला,

श्री भूपेन्द्र सिंह,

श्री वीरेन्द्र कुमार,

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी,

श्री हरिभाऊ जावले,

श्री रमेन डेका,

श्री विश्व मोहन कुमार,

श्री बैद्यनाथ प्रसाद महतो,

श्रीमती हरसिमरत कौर बादल,

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर,

श्री राकेश सिंह,

योगी आदित्यनाथ,

श्री जोसेफ टोप्पो,

श्री गणेश सिंह,

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण,

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल,

श्रीमती दर्शना जरदोश स्वयं को श्री राजनाथ सिंह के विषय के साथ संबद्ध करते हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): सभापति जी, अभी जो सवाल गुप्ता जी, राजनाथ सिंह जी और नेता विरोधी दल ने उठाया है, मैं भी इस राय का हूँ कि सदन के अंदर इस पर चर्चा होनी चाहिए। हम यह चाहते हैं कि पाकिस्तान में जो हो रहा है, उसकी प्रतिक्रिया हिंदुस्तान में नहीं होनी चाहिए। इसलिए बेहतर होगा कि इस पर सदन में विस्तार से चर्चा होनी चाहिए। सरकार का क्या दृष्टिकोण है? क्या सरकार ने अभी तक इस संबंध में पाकिस्तान के राज़दूत से या किसी भी स्तर पर कोई ऐसी बात कही है? सारे अख़बार भरे पड़े हैं। पूरे हिंदुस्तान के अंदर इसकी चर्चा है। मैं समझता हूँ कि देश में जो भी मानवतावादी हैं, उन सब में चिंता की बात होगी। चिंता है और चिंता करनी चाहिए। यह विषय न हिंदू का है और न मुसलमान का है। यह मानवता के खिलाफ अन्याय है। यह मानवता का सवाल है। मानवता के सवाल पर हिंदुस्तान की नीति रही है। पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने एक बार कहा था कि किसी भी देश के अंदर अगर मानवता का हनन होगा, अत्याचार होगा तो हिंदुस्तान चुप नहीं बैठेगा। यह नीति हमारे हिंदुस्तान की लगातार रही है। ऐसा नेहरू जी का पुराना बयान है, मैंने एक जगह पुस्तक में यह पढ़ा है।

सभापति जी, इसलिए आप अपनी चेयर से ही घोषणा कर दीजिए कि इस पर चर्चा हो और चर्चा विस्तार से हो। यहां जो मांग की गयी है, मैं उस मांग से सहमत हूं कि राजदूत को आज ही प्रधानमंत्री जी तलब करके उनसे अपनी प्रतिक्रिया जाहिर कर दें, नाराजगी जाहिर कर दें। अगर वहां ऐसा हो रहा है तो मेरी यह राय है कि इसकी निंदा होनी चाहिए।

सभापति महोदय :

श्री पन्ना लाल पुनिया,

श्रीमती पुतुल कुमारी अपने आपको श्री मुलायम सिंह यादव जी के विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : Mr. Chairman, Sir, Ifrah Siddiqui at a Youth Talent Festival, 2012, delivered an impassioned speech on the subject of 'Rights of Minorities'. I quote:

> "The fact is that there are no minority rights in Pakistan from Shantinagar to Gojra. The history of this land is full of the murders of the minorities. In a country where sectarian terrorism consumed thousands of lives and minorities have been forced to live in fear, Article 20 of the Constitution is nothing but hollow words."

Ifrah Siddiqui is a student of St. Anthony's High School of Lahore. Article 20, she referred to is in the Constitution of Pakistan. She was expressing the plight of the minorities of Pakistan. Kidnappings, forcible conversions and marriages of minor girls, ransacking of residences, robbing of commercial establishment and religious persecution continues unabated in Pakistan. The State apparatus is either non-existent or a mute spectator. This opinion is voiced by an overwhelming majority of Hindu pilgrims who entered India last Saturday which is day before. Slightly well of members are migrating to Karachi or to Islamabad or even to Dubai with no let up in crimes against Hindus in Sindh, Baluchistan and other disturbed areas. They are living in constant fear.

The Hindu community are also approaching Indian Mission for help. Unlike some Islamic countries where religious minorities do not enjoy legal protection against discrimination, Pakistan does have equality law for people of different faiths. In practice, however, Hindus and Christians have many grounds for complaint.

At the time of partition, the Hindus comprised 26 per cent of population including today's Bangladesh that was East Pakistan. Now they are barely two per cent. Pakistan must protect the minority-Hindus. That is what we always ask for.

I urge upon the Government to impress upon Islamabad to provide adequate protection. There are news reports which demonstrate that there is a disconnect between the Home Ministry and the Ministry of External Affairs. Even after the intervention of the Pakistan Supreme Court, their Government is unable to act. The verdict of the fundamentalists is being adhered to. It is high time that our Government should allow the migrant Hindus to come and settle in India.

Recently, I read in a newspaper that they have been told that the moment their visa term ends, they should go back to Pakistan. That is not the way India should respond to this issue. Our frontiers should be opened to all Hindus who want to come and settle here. This is the only place which can give them support, succour and security. That should be the approach of our Government.

MR. CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by Shri Bhartruhari Mahtab:

1. Shri P.L. Punia
2. Shri Shivkumar Udasi
3. Shri A.T. Nana Patil
4. Shri C.R. Patil
5. Shri Devji M. Patel